License Information

Study Notes - Book Intros (Tyndale) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes - Book Intros (Tyndale)

सभोपदेशक

सभोपदेशक हमें बुनियादी प्रश्नों के बारे में गहराई से सोचने के लिए चुनौती देती है। जीवन और इसमें जो कुछ भी है, वह एक व्यर्थ वाष्प की तरह प्रतीत होता है, जो आज यहाँ है और कल चला जाता है। फिर भी, जीवन का कोई उद्देश्य होना आवश्यक है। सभोपदेशक हमे ज्ञान, धार्मिक जीवन, अपने सृजनहार को स्मरण करने, और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने की सलाह देती है। ऐसा करने से हम उस जीवन में आनन्द का अनुभव कर सकते हैं जो परमेश्वर ने हमें प्रदान किया है।

सभोपदेशक

पृष्ठभूमि

जब दाऊद ने अपना साम्राज्य स्थापित कर दिया और इस्राएल अपने शान्ति के स्वर्ण युग में था, तब सुलैमान ने संस्कृति को समृद्ध करने में अपना समय और ऊर्जा लगाई। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य, कूटनीति और कृषि का विकास किया, और नगरों, किलों और मन्दिरों का निर्माण किया। उन्होंने अपने देश को सांस्कृतिक रूप से भौतिक समृद्धि और गहन साहित्य के साथ उन्नत किया। अन्य राष्ट्रों के खिलाफ युद्ध करने के बजाय, सुलैमान ने उन्हें और उनके साहित्य को अपनाया और उनके सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के तरीकों को इस्राएल के प्रभु के साथ सम्बन्ध में शामिल किया। सुलैमान की असफलताएँ प्रसिद्ध हैं, फिर भी उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता से बहुत अच्छा कार्य किया और जीवन को विवेकपूर्ण रूप से संचालित करने के लिए अपनी शिक्षाएँ छोड़ीं।

सभोपदेशक

सारांश

सभोपदेशक की पुस्तक एक प्रवचन या प्रवचनों का संग्रह है जो जीवन के मूल्य और इसमें शामिल सभी चीजों का अन्वेषण करता है और यह बताता है कि लोग क्या करें। यह संग्रह सम्पादक की संक्षिप्त प्रस्तावना (1:1) और उनकी उपसंहार और निष्कर्ष (12:9–14) से जुड़ा हुआ है। इस ढांचे के भीतर "उपदेशक" (इब्रीनी कोहेलेत, जिससे अधिकांश व्याख्याकार उन्हें सम्बोधित करते हैं) के शब्द हैं।

उपदेशक विभिन्न विषयों की व्यापक पड़ताल करते हैं, जैसे समय, काम, ज्ञान, आनन्द, और अन्याय। वे बार-बार एक मुख्य विषय पर लौटते हैं: जीवन और इसमें जो कुछ भी है वह हेबेल (“वाष्प,” जिसे अक्सर "निरर्थक" के रूप में अनुवादित किया जाता है) है। वे चर्चा करते हैं कि मनुष्यों को परमेश्वर की संप्रभुता के अधीन इस संसार की परिस्थितियों से कैसे निपटना चाहिए। इस चर्चा को पुस्तक के अन्त में सम्पादक द्वारा संक्षेपित किया गया है: “सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।” (12:13–14)।

लेखक और प्राप्तकर्ता

मुख्य वक्ता को एक राजा, "उपदेशक," और दाऊद के पुत्र के रूप में पहचाना गया है (देखें 1:1, 12, 16; 2:7, 9); ये विवरण स्पष्ट रूप से सुलैमान की ओर संकेत करते हैं। उनके भाषण को एक सम्पादक की प्रारम्भिक और समापन टिप्पणियों के भीतर रखा गया है (1:1; 12:9–14), जो बुद्धिमान उपदेशक का सम्मान करता है और अपने कुछ सहायक सुझाव भी जोड़ता है।

"उपदेशक" के लिए प्रयुक्त शब्द (इब्रानी कोहेलेत) का शाब्दिक अर्थ है "[वह जो] सभा या समुदाय को एकत्र करता है।" यह विचार पुस्तक के यूनानी शीर्षक, सभोपदेशक (यूनानी एक्लेसिया, "सभा, मण्डली") में व्यक्त किया गया है। कम से कम एक अवसर पर, सुलैमान ने इस्राएल के गोत्रों के प्रधानो और प्रतिनिधियों की एक सभा को सम्बोधित किया (देखें 2 इति 5:2–7:7)। हमें यह भी बताया गया है कि कई राजा और राजदूत सुलैमान की बुद्धि सुनने के लिए उसके पास आए थे (1 रा 4:34; 10:23–24)। सम्भवतः सभोपदेशक की सामग्री एक या अधिक ऐसे अवसरों पर सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत की गई थी।

सभोपदेशक

सभोपदेशक को ज्ञान साहित्य के रूप में समझना

सभोपदेशक, अय्यूब और नीतिवचन के साथ ज्ञान पुस्तकों में से एक है। ज्ञान साहित्य, व्यवस्था की आवश्यकताओं से परे, परमेश्वर की प्रसन्नता पर जोर देता है। ये पुस्तकें परमेश्वर के लोगों को व्यक्तिगत रूप से सफल होने और समाज की समग्र सफलता को बढ़ाने के तरीके बताती हैं। सभोपदेशक में उपदेशक ज्ञान को परमेश्वर और संसार की कार्यप्रणाली की समग्र समझ के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो जीवनभर की जाँच के माध्यम से सीखा जाता है। उनके निष्कर्ष उनके प्रवचन का मुख्य विषय हैं।

सभोपदेशक

अर्थ और संदेश

इस प्रवचन में, उपदेशक जीवन के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न को सम्बोधित करते हैं: क्या कुछ भी अन्ततः सार्थक है? यदि हम एक क्षणिक छाया या एक क्षणिक सांस हैं, तो हमारे जीवन का अर्थ कैसे हो सकता है?

उपदेशक इस दार्शनिक प्रश्न को सरकार और रोजमर्रा के जीवन के वास्तविक संसार के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं, जहाँ प्रशासकों और साधारण नागरिकों को जीवन के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। उनका सन्देश एकीकृत है, और सम्पादक इसके निहितार्थों का सारांश प्रस्तुत करता है (12:13–14): जीवन और इसमें जो कुछ भी है वह क्षणिक है और स्पष्ट रूप से निरर्थकता से भरा हुआ है। इस संसार में सब कुछ अस्थायी है, और जीवन की निराशाएँ इस निष्कर्ष तक ले जा सकती हैं कि यह अर्थहीन है। जो हम करते हैं वह स्थायी नहीं होता, और हम संसार में ही अर्थ नहीं खोज सकते। हम जल्द ही मर जाएंगे और भुला दिए जाएंगे, इसलिए हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारा जीवन अल्पकालिक है और जब तक सम्भव हो, इसका आनन्द लेना चाहिए। परन्तु एक पतित संसार की ये वास्तविकताएँ निराशा उत्पन्न नहीं करतीं क्योंकि हम एक ऐसे संसार में भी रहते हैं जो परमेश्वर द्वारा शासित है, और इसका उनके सन्दर्भ में अर्थ और उद्देश्य है। हमें उनके आदेशों का पालन करने और उन्हें प्रसन्न करने के लिए जीवन जीने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए क्योंकि शीघ्र ही हम उनके सामने न्याय के लिए खड़े होंगे।

सभोपदेशक की बुद्धि यह सिखाती है कि जीवन की क्षणभंगुरता और इसकी प्रतीत होने वाली निरर्थकता के बावजूद, हम इसमें न केवल जी सकते हैं बल्कि इसमें समृद्ध भी हो सकते हैं। यद्यपि हम परमेश्वर की सभी योजनाओं या अपने जीवन के उद्देश्य को पूरी तरह समझ नहीं सकते, फिर भी सभोपदेशक हमें यह आश्वासन देता है कि हमारे संप्रभु परमेश्वर हर घटना—चाहे वह सुखद हो या दुखद—पर अपना नियन्त्रण रखते हैं। जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे जीवन की इस प्रतीत होने वाली निरर्थकता को एक प्रेरणा के रूप में लेंगे कि वे जब तक जीवित हैं, तब तक मेहनत और बुद्धिमानी से अपने लक्ष्य प्राप्त करें और इस प्रक्रिया में परमेश्वर के उत्तम उपहारों का आनन्द उठाएँ।